शाम सवेरे नयन बिछाकर | By Sudhir Sangha

शाम सवेरे नयन बिछाकर
राह तकू हूं मैं मोहन की...2
शाम सवेरे.....
ना जाने अब कब चमकेगी....2
किस्मत रे इस जोगन की
शाम सवेरे.....

प्रीत की ऐसी अगन जलाकर मुझको अकेला छोड़ गए
जन्म जन्म का प्रेम का बंधन एक पल में ही तोड़ गए....2
बिरहन की अंखियों से बरसे....
बिरहन की अंखियों से बरसे बिन सावन रुत सावन की
शाम सवेरे.....

घर-घर मेरी प्रीत की चर्चा घर घर मेरे प्रेम की बातें
दुनिया की अब परवाह नहीं है सांवरे जब तू है मेरे साथ....2
पंख बिना भी उड़ जाती हैं
पंख बिना भी उड़ जाती हैं बात दिलों के बंधन के
शाम सवेरे.....

हाल हुआ क्या तुम बिन मोहन खोई खोई रहती हूं
सखियां सारी पूछे मुझसे चुप चुप क्यों मैं रहती हूं.....2
ऐसा जादू डार गए हो.....
ऐसा जादू डार गए हो सुध बिसराई तन मन की
शाम सवेरे.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%b8%e0%a4%b5%e0%a5%87%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%a8%e0%a4%af%e0%a4%a8-%e0%a4%ac%e0%a4%bf%e0%a4%9b%e0%a4%be%e0%a4%95%e0%a4%b0-by-sudhir-sangha/